SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पश्चिम एशियाई क्षेत्रो में शस्त्रीकरण व निशस्त्रीकरण

दीपा यादव, शोधार्थी, रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग
पी.जी. विभाग एवं अनुसंधान केंद्र एस.एम.एस. सरकार, साइंस कॉलेज ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
गिरीश शर्मा, Ph.D, मार्गदर्शक, सैन्यविज्ञान पी.जी.विभाग एवं अनुसंधान केंद्र सरकार
साइंस कॉलेज ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authorss
दीपा यादव, शोधार्थी
गिरीश शर्मा, Ph.D
E-mail : deepayadav.mjs@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/11/2024
Revised on : 31/01/2025
Accepted on : 10/02/2025
Overall Similarity : 00% on 01/02/2025

शोध सार

विश्व के लगभग सभी विकासशील देशों में खाद्यान्न अन्न भण्डारण की अपेक्षा आधुनिक शस्त्रों के भण्डारण की प्रवृत्ति अधिक होती है। यह प्रवृत्ति वह राष्ट्रीय हितों की पूर्ति की आड़ में करता रहता है। इसकी वजह से क्षेत्रीय राष्ट्रों में प्रतिद्वन्द्वता की भावना जागृत होती है जिससे जब–जब अन्तहीन क्षेत्रीय शस्त्रों की होड़ प्रारम्भ हुयी, तब–तब उसने दो महायुद्धों को जन्म दिया। पश्चिम एशिया क्षेत्र इससे अछूता नहीं है इस क्षेत्र में भी अधिकांश राष्ट्र विकासशील है एवं यह राष्ट्र द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त निरंतर शस्त्रों की होड़ में लगे हुये है। समय–समय पर इन राष्ट्रों में सशस्त्र संघर्ष विभिन्न कारण से होते रहे हैं। इन संघर्षों के दौरान कई बार ऐसी परिस्थितियों निर्मित हो गई जिससे लगने लगा था कि तृतीय विश्व युद्ध शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता एवं महाशक्तियों की सूझबूझ के कारण यह महायुद्ध टलता रहा। पश्चिम में शस्त्रों की होड़, विभिन्न राष्ट्रों में आपसी तनाव एवं महाशक्तियों की इस क्षेत्र मे रूचि एवं हित आज भी विद्यमान हैं। यही परिस्थितियों चलती रही तो कभी भी यह क्षेत्र विश्वशान्ति को खतरा उत्पन्न कर सकता है, एवं भावी तृतीय विश्वयुद्ध की जन्मस्थली सिद्ध हो सकती है।

मुख्य शब्द

निशस्त्रीकरण शस्त्रीकरण, शस्त्र व्यापार, पश्चिम एशिया, भू–सामरिकी, युद्ध.

परिचय

शस्त्रों की होड़ में शामिल राष्ट्र को स्वयं शस्त्रों का निर्माण करना आवश्यक नहीं है विकासशील राष्ट्र अपनी आर्थिक क्षमता के अनुरूप शस्त्र निर्माण करने वाले

अपने मित्र राष्ट्रों से विशाल मात्रा में शस्त्रास्त्र प्राप्त कर शस्त्रों की होड़ सम्मिलित हो सकता है। इसके अतिरिक्त वह न्यूनमत तकनीकी एवं औद्योगिक क्षमता प्राप्त कर युद्ध को निरन्तर एवं लम्बे समय तक जारी रखने की क्षमता भी प्राप्त कर सकता है जिसमें विकसित तकनीकी का हस्तान्तरण भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को ताक में रखकर शस्त्रास्त्र प्राप्त करना भी क्षेत्रीय शस्त्रों की होड़ को प्रोत्साहित करता है।

पश्चिम एशिया क्षेत्र में शस्त्रों की होड की शुरूआत 1955 के चेकोस्लोवाकिया, मिस्त्र, शस्त्र समझौते के उपरांत प्रारम्भ हुयी एवं प्रत्येक युद्ध के बाद यह संख्या लगातार बढ़ती चली गयी। अक्टूबर 1973 के युद्ध के उपरान्त यह अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। 1973 के युद्ध में इजराइल को यह आभास हुआ कि वह यदि दो मोर्चो पर युद्ध लड़ता है तो उसे सामरिक संरक्षित शस्त्रों की कमी रहती है। अतः उसने इस कमी की पूर्ति के लिये मित्र राष्ट्रों से शस्त्रास्त्र प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया दूसरी ओर अरब राष्ट्रों को यह अहसास हो गया कि उनके शस्त्रास्त्र असामयिक हो गये है, अतः उसे पुराने शस्त्रों को बदलने की अपेक्षा विश्व शस्त्रास्त्र बाजार से आधुनिकतम शस्त्रास्त्र प्राप्त करना ही अधिक उपयोगी लगा।

तृतीय विश्व के प्रमुख बीस शस्त्र आयातक देशों का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि इसमें प्रथम दस में से छः तथा बीस में से आठ देश पश्चिम एशिया के ही है। शस्त्रों की होड़ में क्षेत्र में कई ऐसे कारण होते हैं जिनकी वजह से इसे बढ़ावा मिलता है। विकासशील राष्ट्र सामान्यतः यह अवधारणा बना लेते हैं कि वे किसी न किसी रूप में असुरक्षित है। सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न राष्ट्र अमेरिका भी अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है इसी तथ्य को ध्यान में रखकर वह आधुनिकतम एवं सर्वाधिक विशिष्ट शस्त्रों के निर्माण में सतत् लगा रहता है, ऐसी स्थिति में वह निरन्तर आधुनिकतम शस्त्रों का निर्माण करता रहता है। पश्चिम एशिया क्षेत्र में भी शस्त्रों की होड़ के क्षेत्र में विभिन्न कारणों को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता हैः

1. **सुरक्षा एवं आत्मसरक्षाः** प्रत्येक राष्ट्र को आत्मरक्षा का अधिकार है लेकिन आत्मरक्षा के लिये वह इतने अधिक सम्भावित खतरे मूल्यांकित कर लेता हें कि जिनकी आड़ में वह विशाल मात्रा में शस्त्रों का भण्डारण करने लगता है और यह क्षेत्रीय शस्त्रों की होड़ का कारण बनता है। पश्चिम एशिया में भी इसी तरह शस्त्रों की होड़ प्रारम्भ हुयी जिसने कई संघर्षों को जन्म दिया।
2. **परम्परावाद से उत्पन्न समस्यायेंः** विभिन्न राष्ट्रों में राजनीति के अर्न्तगत यदि परम्परावाद में बदलाव किया जाता है तब वहां की आन्तरिक सुरक्षा प्रभावित होती है जिसकी वजह से शस्त्रों की होड़ को बढ़ावा मिलता है। विभिन्न राष्ट्रों में क्षेत्रीयवाद, जातिवाद, आर्थिक विषमता, आदि कारणों से राष्ट्रों में आन्तरिक सुरक्षा को गम्भीर चुनौतियां उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण विभिन्न राष्ट्र शस्त्रों के भण्डारण की ओर अग्रसर होते हैं जोकि क्षेत्रीय शस्त्रों की होड़ में परिवर्तित हो जाता है। विकासशील राष्ट्रों में यह एक गम्भीर चुनौती है।
3. **मनोवैज्ञानिक असुरक्षाः** विकासशील राष्ट्रों में मनोवैज्ञानिक असुरक्षा एक अन्य ऐसा महत्वपूर्ण तथ्य है जिसके कारण शस्त्रों की होड़ को बढ़ावा मिलता हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपनी क्षेत्रीय अखण्डता एवं राजनैतिक स्वतंत्रता को इतना अधिक सुरक्षित करना चाहता है कि उसे किसी भी प्रकार का कोई खतरा उत्पन्न न हो सकें व मनोवैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध करना चाहता है कि वह एक बड़ा एवं शक्तिशाली राष्ट्र हैं। शक्तिशाली दिखाई देने के लिये विशाल मात्रा में आधुनिकतम शस्त्रों से सुसज्जित होना आवश्यक हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपनी अखण्डता एवं राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रति इतना अधिक आश्वस्त होना चाहता है कि उसे सम्भावित संघर्ष का भी बोध नहीं हो पाता हैं पश्चिम एशिया में भी कुछ इसी प्रकार की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति विभिन्न राष्ट्रों दिखाई देती है।
4. **सैन्यीकरणः** जिन राष्ट्रों में सैनिक शासन होता है वे सामान्यतः शस्त्रों को प्राप्त करने की सर्वाधिक वरीयता देते हैं। यह राष्ट्र सामान्यतः सौहार्दपूर्ण वातावरण निर्मित करने की अपेक्षा क्षेत्र में असुरक्षा की भावना को आधिक जन्म देते हैं जिससे क्षेत्रीय शस्त्रों की होड को बढ़ावा मिलता है। पश्चिम एशिया में भी कुछ राष्ट्रों में भी सैनिक शासन होने के कारण क्षेत्रीय शस्त्रों की होड़ को भी बढ़ावा मिला है।

5. **आर्थिक कारणः** शस्त्रों की राजनीति श्रेष्ठ अर्थव्यवस्था के बिना सम्भव नहीं है। कोई भी राष्ट्र जो शस्त्रों की होड़ में सम्मिलित हैं अपने राष्ट्रीय हितों को ताक पर रखकर इसमें भाग लेता हैं। जिस राष्ट्र की जितनी अधिक अर्थव्यवस्था मजबूत होगी, उतना ही अधिक बढ़–चढ़कर वह शस्त्रों की होड में भाग लेगा। पश्चिम एशिया जहाँ नैसर्गिक काला सोना (पेट्रोलियम) विशाल मात्रा में पाया जाता है इन शस्त्रों ही होड़ के क्षेत्र में यह एक प्रमुख कारण है।

   विकसित राष्ट्रों के द्वारा शस्त्र व्यापार की वजह से विकासशील राष्ट्रों में परम्परागत शस्त्रों की होड की वजह से क्षेत्रीय शांति को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिसके कारण यहां अस्थिरता एवं असुरक्षा का वातावरण व्याप्त हो जाता हैं। पश्चिम एशिया क्षेत्र इससे अछूता नहीं हैं। शस्त्र नियंत्रण के सम्बन्ध में विचार करते समय यदि हम गम्भीरता से सोचे एवं सैन्य शक्ति के रूप में विकसित राष्ट्र यदि शस्त्र व्यापार पर रोक लगा दे तो विश्व के कई क्षेत्रों में शान्ति स्थापित हो सकती है। मध्य यूरोप हो या इन सभी क्षेत्रों में विकसित राष्ट्रों या महाशक्तियों द्वारा शस्त्र व्यापार की आपसी प्रतिस्पर्धा, इन क्षेत्रों मे अस्थिरता, असुरक्षा एवं संघर्ष का मुख्य कारण है। विकसित राष्ट्रों के हित एवं स्वार्थ विभिन्न क्षेत्रों में आपस में टकराते है जिसके कारण शस्त्रों की होड़ को बढ़ावा मिलता है।

6. **असुरक्षा की भावनाः** पश्चिम एशिया क्षेत्र में कोई भी राष्ट्र चाहे बडा हो या छोटा अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है। शस्त्रों के मामले में इस क्षेत्र में कोई भी राष्ट्र आत्म निर्भर नहीं है, अतः विश्व के विभिन्न स्त्रोतों से वह आधुनिकतम शस्त्र प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है।

7. **पेट्रो डॉलर की बहुतायताः** पश्चिम एशिया क्षेत्र में पेट्रोल की बहुतायता के कारण क्षेत्रीय राष्ट्रों के पास सोना एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा का कोई अभाव नहीं है। इस प्रकार पश्चिमी एशियाई राष्ट्रों पर अपार अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा एकत्रित होने लगी। खाड़ी राष्ट्रों में इन दौरान अपने सैनिक खर्च में कई गुना अधिक वृद्धि कर दी जिसके कारण इस क्षेत्र में परम्परागत शस्त्रों का अम्बार हो गया जिससे क्षेत्रीय सुरक्षा एवं शान्ति की गम्भीर चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई।

8. **सशस्त्र सेनाओं को आधुनिकीकरणः** पश्चिम एशिया का प्रत्येक राष्ट्र अपनी सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण के प्रति चिन्तित है। शस्त्रों के क्षेत्र मे इतनी तीव्र गति से विकास हो रहा है कि जिसके कारण इन राष्ट्रों को निरन्तर अपनी सेनाओं के आधुनिकीकरण के लिये प्रयासरत रहना आवश्यक होता है। क्षेत्र में विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र मे सीमित विकास के कारण इन राष्ट्रों को निरन्तर आधुनिकतम शस्त्रों की विश्व बाजार से खरीदना आवश्यक होता है।

9. **सैनिक एवं असैनिक संधियाः** शस्त्रों की होड़ को बढ़ावा देने में सैनिक एवं असैनिक संधियों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त दो महाशक्तियों अमेरिका एवं सोवियत संघ विश्व राजनीति में उभरकर आयी जिसकी वजह से शीत युद्ध का दौर प्रारम्भ हो गया। इस कारण कई सैनिक संधियां जैसे नाटो, वार्सा, सेन्टो, सीटी आदि सैनिक संधियां हुई। इन संधियों के केन्द्र अमेरीका एवं सोवियत संघ थे। उन्होंने इन सैनिक संधियों के माध्यम से विश्व में हथियारों को होड़ को काफी बढ़ावा दिया।

पश्चिम एशिया में शस्त्रास्त्रों के निर्यातकों का यदि हम 2000 से 2007 तक विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट होता है कि अल्जीरिया, बहरीन, इजिप्ट, ईरान, इजराईल, इराक, जोर्डन, कुवैत, लेबनान, लीबिया, मोरक्को, ओमान, कतर, सउदी अरब, सीरिया, ट्यूनिशिया संयुक्त अरब अमीरात यूएई, एवं यमन आदि पश्चिम एशियाई राष्ट्रों को मुख्यतः अमेरिका, रूस, चीन व अन्य पश्चिम यूरोप व अन्य यूरोपीयन राष्ट्रों के द्वारा शस्त्रास्त्रों का निर्यात किया गया है।

निष्कर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत समस्त विश्व में हुये सैन्य संघर्षों एवं युद्धों का मूल्याकंन करें तो यह स्पष्ट होता हैं कि द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत शक्ति संघर्ष व सैन्य संघर्ष का प्रमुख केन्द्र पश्चिम एशिया ही रहा है। चाहे अरब इजराइल युद्ध हो, ईरान–इराक युद्ध हो, खाड़ी युद्ध अथवा सैन्य संघर्ष हो, द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत से वर्तमान

समय तक पश्चिम एशिया में निरंतर सैन्य संघर्ष जारी है। इसका प्रमुख कारण अत्यधिक तीव्रगति के साथ पश्चिम एशियाई राष्ट्रों को निर्विरोध रूप से शस्त्रास्तों की आपूर्ति एवं भण्डार भी है।

मुख्यतः पश्चिम एशिया में शस्त्रों की होड़ के लिये निम्नलिखित तत्व उत्तरदायी हैः

1. बड़ी शक्तियों के हित।
2. क्षेत्रीय पिछडेपन।
3. अर्न्तराष्ट्रीय शक्ति प्रतिस्पर्धा महत्व।
4. सामरिक महत्व।
5. पेट्रो डॉलर की चाहत।
6. शस्त्रों का अधिकाधिक भण्डारण आदि।

संदर्भ सूची

1. Andersen R.R. (1990) *Politics and change in middle east,* Oxford Press, Ithaca, p. 219.
2. Dawdal, Shebonti Rai (1994) The middle east peace process, *Strategic Analysis,* vol- xvii, no- 7, oct, 1994, p. 889.
3. Heller, Mark (1983) The middle east military balance 1983", Tel Aviv University, Hussin Publisers, Tel Aviv University, Tel Aviv, p. 299-302.
4. Huisken, Ron (1993) *The development of the conventional arms trade,* Hussin Publisers, Tel Aviv, p. 312.
5. Kennedy, Gavin (1984) *The military in the third world,"*, Luis Publication, London, p. 253.
6. Kumaraswamy, P.R. (1994) The gaza – Jericho agreement; an asymmetrical accord, *Strategic Analysis,* Vol. xvii no-2, May 1994, p. 220-31.
7. Miller, K. (1990) *Arms and politics in third world,* Luis Publication, London, p. 79.
8. Nannuan, Sukhwant Singh (1994) Us arms transfers and politics objecives in the middle east, *Strategic Analysis,* xvi no-4, July 1993, p. 458-59
9. Robian, R.L. (1994) *Armament in the partisan gulf*, Oxford Press, New york, p. 61.
10. World armmrnts and disarmanment sipri year book 1986, Oxford University Press, New York, 1986, p. 325.

****